जगद्गुरु श्रीगौरकिशोर दास बाबाजी महाराज

(शिक्षा समन्वित जीवनी)

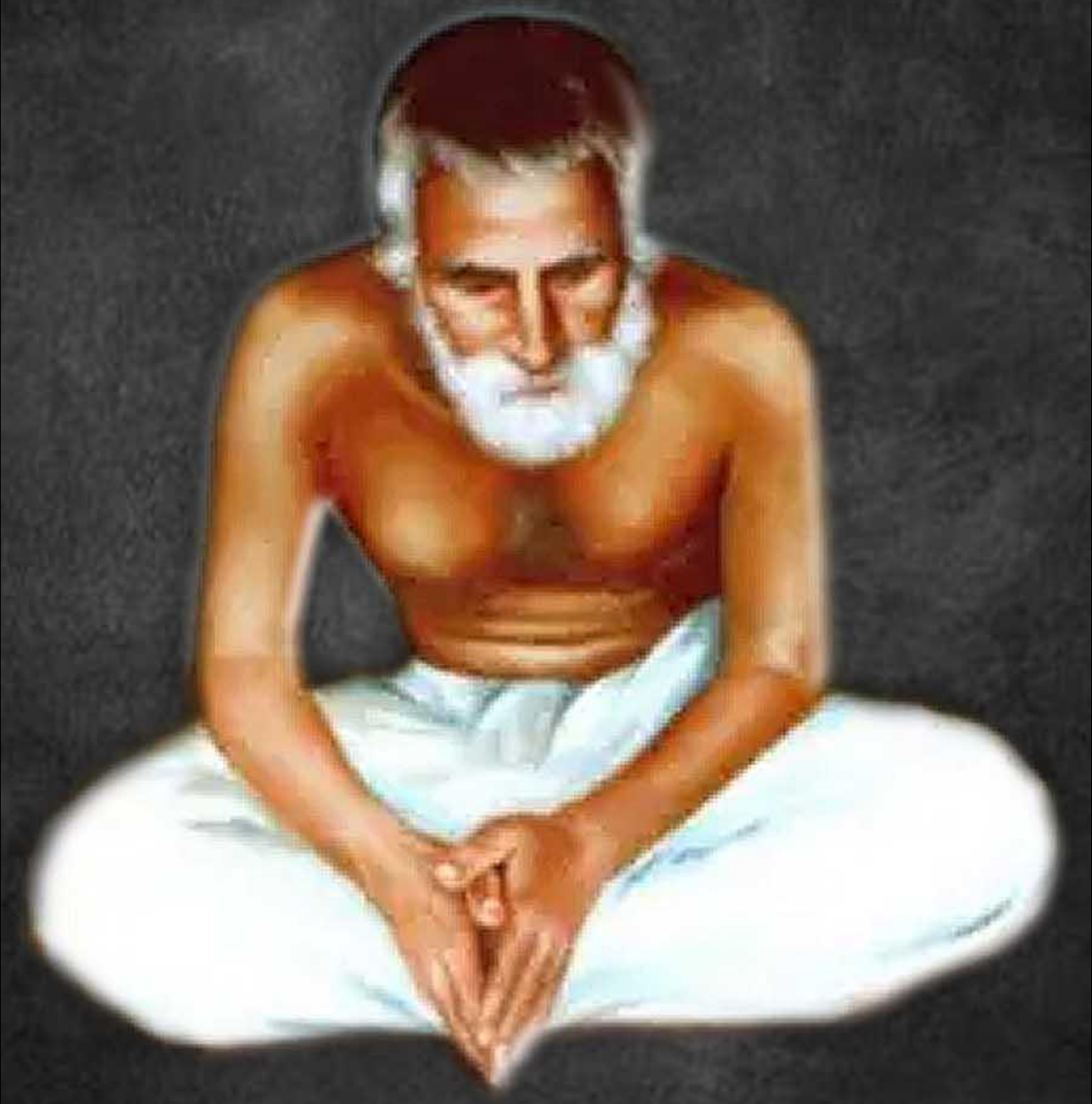

श्रील प्रभुपाद भक्ति सिद्धान्त सरस्वती ठाकुर जी की दिव्य लेखनी से संकलित

SGD

महाभागवतों का अनुकरण

श्रीलगुरुदेव

एक ब्राह्मण ब्रह्मचारी, श्रील गौरकिशोर दास बाबाजी महाराज के पास आकर हरिभजन का बहुत अभिनय करने लगा। कुछ दिनों में ही लोग उसका खूब सम्मान करने लगे। यह देखकर उक्त ब्रह्मचारी ब्राह्मण ने सोचा कि श्रील बाबाजी महाराज जिस प्रकार एक छप्पर में रहते हैं, वह भी उसी प्रकार एक छप्पर में रहेगा। ब्रह्मचारी ने छिपाकर कुछ धन संग्रह करके एक छप्पर तैयार कर

लिया और गंगा के किनारे इस छप्पर को स्थापित कर दिया। ब्रह्मचारी ने बाबाजी महाराज का आदेश लेकर छप्पर में प्रवेश करने के लिए विचार किया, लेकिन अंतर्यामी बाबाजी महाराज पहले ही बोल उठे — “ब्रह्मचारी जी, आपकी भजन करने की इच्छा है, अच्छी बात है, लेकिन माया के घर में प्रवेश करके आप और अधिक माया में जकड़े जाएँगे; आप छप्पर को छोड़कर पेड़ के नीचे रहकर भजन करिए।" तब (वहाँ उपस्थित) बाबाजी महाराज के अनुगत- अभिमानी एक व्यक्ति ने बाबाजी महाराज से पूछा – "आपने पहले घर का दरवाज़ा बन्द करके

हरिनाम करने की बात हमें कही थी। अब आप दोबारा क्यों कह रहे हैं कि पेड़ के नीचे न रहने से हरिभजन नहीं होगा ?" इस पर श्रील बाबाजी महाराज ने बहुत क्रोधित होकर कहा, - - "मैंने ठीक ही कहा था, यह शरीर घर है और आँखें— दो दरवाजे। जो व्यक्ति लकड़ी - पत्थर के घर के दरवाज़े बन्द करके केवल आँखों द्वारा देखकर वैष्णवों के अनुकरण (नकल) की शिक्षा ग्रहण करता है, उसके घर के दरवाज़े बन्द नहीं हुए हैं, उसके लिए वृक्ष तल का आश्रय ही एकमात्र उपाय है। गुरु और वैष्णवों की आज्ञा का पालन करने से ही परम कल्याण होता है

और उस आज्ञा के प्रति यदि श्रद्धा रहे, तब भी क्रमशः आज्ञा पालन करने की सामर्थ्य आती है लेकिन उनकी नकल करने से अर्थात् उनके आचरण का अनुकरण करने से अतिशीघ्र पतन ही होता है।" उस ब्रह्मचारी के चले जाने के बाद श्रील बाबाजी महाराज ने सभी को कहा, देखो लोगों की बुद्धि कैसी खराब हो गई है! रास्ते के किनारे कुटिया बनाई है, लोगों से सम्मान मिलेगा – इस आशा में। दो-चार दिन बाद ही धन कमाने की इच्छा जाग जाएगी। जिनको एक गठरी ढोने का भी अधिकार नहीं मिला है, वे परमहंसों के आचरण का अधिकार प्राप्त करना

चाहते हैं !" इसके कुछ दिन बाद ही उस ब्रह्मचारी की घर वापिस जाने की वासना जाग गई।

श्रील बाबाजी महाराज के पास उपस्थित किसी एक व्यक्ति ने उक्त ब्रह्मचारी के सम्बन्ध में बाबाजी महाराज से प्रश्न किया कि— इस ब्रह्मचारी ने तो साधु-संग किया है फिर माया ने इसे क्यों घेर लिया? क्या इसे साधु-संग का फल नहीं मिलेगा ? श्रील बाबाजी महाराज ने कहा, 'साधु - संग का अभिनय साधु-संग नहीं है; साधु-संग का फल फलीभूत होने से पहले ही यदि

साधु-संग को त्याग दिया जाए तो उस फल से वंचित होना पड़ता है। अब उसका इतना हो गया है कि वह शायद मच्छली - माँस आदि नहीं खाएगा, या कुछ एक बाहरी सदाचार पालन करेगा, लेकिन वह हरिभजन के राज्य में प्रवेश नहीं कर पाया।

श्रीलगुरुदेव